अत्यंत गोपनीय केवल आंतरिक एवं सीमित प्रयोग हेतु

अंक-योजना

विषय- हिंदी

कक्षा - दसवीं

सामान्य निर्देश :-

1. परीक्षार्थियों के सही और उचित आकलन के लिए उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। मूल्यांकन में एक छोटी-सी त्रुटि भी गंभीर समस्या को जन्म दे सकती है, जो परीक्षार्थियों के भविष्य, शिक्षा प्रणाली और अध्यापन-व्यवस्था को भी प्रभावित कर सकती है। इससे बचने के लिए अनुरोध किया जाता है कि मूल्यांकन प्रारंभ करने से पूर्व ही आप मूल्यांकन निर्देशों को पढ़ और समझ लें।
2. योग्यता आधारित प्रश्नों का मूल्यांकन करते समय कृपया दिए गए उतरों को समझे, भले ही उत्तर मार्किंग स्कीम में न हो, छात्रों को उनकी योग्यता के आधार पर अंक दिए जाने चाहिए।
3. अंक योजना में उत्तरों के लिए केवल सुझाए गए मान बिंदु होते हैं। ये केवल दिशा-निर्देशों की प्रकृति के हैं और पूर्ण नहीं हैं। यदि परीक्षार्थियों की अभिव्यक्ति सही है तो उसके अनुसार नियत अंक दिए जाने चाहिए।
4. परीक्षक सही उत्तर पर सही का चिह्न (√) लगाएँ और गलत उतर पर गलत का (×) मूल्यांकनकर्ता द्वारा ये चिह्न न लगाने से ऐसा समझ में आता है कि उत्तर सही है, परंतु उस पर अंक नहीं दिए गए।
5. यदि किसी प्रश्न के उपभाग हो तो कृपया प्रश्नों के उपभागों के उत्तरों पर दायी ओर अंक दिए जाएँ। बाद में इन उपभागों के अंकों का योग बायाँ और के हाशिये में लिखकर उसे गोलाकृत कर दिया जाए।
6. यदि किसी प्रश्न के कोई उपभाग न हो तो बायीं ओर के हाशिये में अंक दिए जाएँ और उन्हें गोलाकृत किया जाए।
7. यदि परीक्षार्थी ने किसी प्रश्न का उत्तर दो स्थानों पर लिख दिया है और किसी को काटा नहीं है तो जिस उत्तर पर अधिक अंक प्राप्त हो रहे हो, उस पर अंक दें और दूसरे को काट दें। यदि परीक्षार्थी ने अतिरिक्त प्रश्न/प्रश्नों का उत्तर दे दिया है तो जिन उत्तरों पर अधिक अंक प्राप्त हो रहे हो, उन्हें ही स्वीकार करे, उन्हीं पर अंक है।
8. एक ही प्रकार की अशुद्धि बार-बार हो तो उसे अनदेखा करें और उस पर हर बार अंक न काटे जाएँ।
9. यहाँ यह ध्यान रखना होगा कि मूल्यांकन में पूर्ण अंक पैमाना 0-80 (उदाहरण 0-80 अंक जैसा कि प्रश्न में दिया गया है) का प्रयोग अभीष्ट है, अर्थात परीक्षार्थी ने यदि सभी अपेक्षित उत्तर-बिंदुओं का उल्लेख किया है तो उसे पूरे अंक देने में संकोच न करें।
10. ये सुनिश्चित करें कि उत्तर पुस्तिका के अंदर दिए गए अंकों का आवरण के अंकों के साथ मिलान हो।
11. आवरण पृष्ठ पर दो स्तंभों के अंकों का योग जाँच लें ।

Downloaded from cclchapter.com

12.उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन करते हुए यदि कोई उत्तर पूर्ण रूप से गलत हो तो उस पर (x) निशान लगाएँ और शून्य (0) अंक दें।

13.उत्तर पुस्तिका में किसी प्रश्न का बिना जाँचे हुए छूट जाना या योग में किसी भूल का पता लगना, मूल्यांकन समिति के सभी लोगों की छवि को और बोर्ड की प्रतिष्ठा को धूमिल करता है। परीक्षक सुनिश्चित करें कि सभी उत्तरों का मूल्यांकन हुआ है। आवरण पृष्ठ पर तथा योग में कोई अशुद्धि नहीं रह गई है तथा कुल योग को शब्दों और अंकों में लिखा गया है।

उपर्युक्त मूल्यांकन निर्देश उत्तर-पुस्तिकाओं की जाँच हेतु आदेश नहीं अपितु केवल निर्देश हैं। यदि इन मूल्यांकन निर्देशों में किसी प्रकार की त्रुटि हो, किसी प्रश्न का उत्तर स्पष्ट न हो, अंक योजना में दिए गए उत्तर से अतिरिक्त कोई और भी उत्तर सही हो, तो परीक्षक अपने विवेकानुसार उस प्रश्न का मूल्यांकन करे।

अंक-योजना

विषय - हिंदी

कक्षा - दसवीं

कोड - A

कक्षा : दसवीं अधिकतम अंक 80

सामान्य निर्देश :-

1. अंक योजना का उद्देश्य मूल्यांकन को अधिकाधिक वस्तुनिष्ठ बनाना है।
2. वर्णनात्मक प्रश्नों के अंक योजना में दिए गए उत्तर बिंदु अंतिम नहीं है बल्कि ये सुझावात्मक एवम् सांकेतिक हैं।
3. यदि परीक्षार्थी इन सांकेतिक बिंदुओं से भिन्न , किन्तु उपयुक्त उत्तर है, तो उन्हें अंक दिए जाएँ।
4. मूल्यांकन कार्य निजी व्याख्या के अनुसार नहीं बल्कि अंक योजना में दिए गए निर्देशानुसार ही किया जाए।

Downloaded from cclchapter.com

खंड -क

प्रश्न- संख्या	उत्तर	अंक विभाजन

प्रश्न-1 व्याकरण एवम् रचना पर आधारित प्रश्नों के उत्तर

क)	जिस समास में दोनों पदों के मध्य विशेषण -विशेष्य या उपमान -उपमेय का संबंध होता है,उसे कर्मधारय समास किसे कहते हैं। जैसे - नीलगगन - नीला है जो गगन।	2 अंक
ख)	(i) मत + अनुसार (ii) भारत + इन्दु	1+1 अंक
ग)	(i) अति - अतिक्रमण (ii) उप -उपकार	1+1 अंक
घ)	(i) घर, निकेतन (ii) अश्व, घोटक	1+1 अंक
ङ)	(i) एकमात्र सहारा- श्रवण कुमार अपने माता- पिता के लिए अंधे की लाठी के समान था। (ii) होश आना - फेल होने पर राम की आँखें खुल गई।	1+1 अंक
च)	जहाँ रूप,गुण आदि की समानता के आधार पर किसी साधारण व्यक्ति,वस्तु, प्राणी की तुलना किसी प्रसिद्ध व्यक्ति,वस्तु,प्राणी से की जाए,वहाँ उपमा अलंकार होता है।जैसे - पीपर पात सरिस मन डोला।	2 अंक
छ)	दोहा एक अर्द्धसममात्रिक छंद है। इसके प्रथम तथा तृतीय चरण में 13-13 तथा द्वितीय एवं चतुर्थ चरण में 11 -11 मात्राएं होती हैं। द्वितीय एवं चतुर्थ चरण के अंत में गुरु लघु वर्ण आते हैं. जैसे -तुलसी या संसार में मिलयो, सबसों धाये । ना जाने किस रुप में, नारायण मिल जाये ।।	2 अंक

प्रश्न- 2 किसी एक विषय पर निबंध — **5 अंक**

क)	भूमिका	1
ख)	विस्तार + निर्धारित शब्द सीमा	3
ग)	उपसंहार	1

प्रश्न- 3 पत्र लेखन — **5 अंक**

क)	आरंभ और अंत की औपचारिकताएं	1
ख)	विषय वस्तु	3
ग)	भाषा	1

खंड - ख (क्षितिज काव्य खंड)

प्रश्न- 4 बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर — **6 अंक**

(i)	क) कमल	1
(ii)	क) बालकाण्ड	1
(iii)	ग) जीवन के रहस्य जानना	1
(iv)	क) बादल को	1
(v)	ख) जलजात	1
(vi)	ग) मुख्य गायक की आवाज़ में अपनी आवाज़ मिलाना	1

प्रश्न- 5 काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर — **(5)**

(i)	कवि - सूरदास , कविता - सूरदास के पद	1
(ii)	उद्धव गोपियों को निर्गुण योग साधना का संदेश देने आए हैं लेकिन गोपियाँ अपने वाक् चातुर्य से उसे परास्त कर देती हैं।	1
(iii)	गोपियाँ अपना मन वापिस पाना चाहती हैं जो चलते हुए श्रीकृष्ण चुरा कर ले गए थे।	1
(iv)	अब गुरु - ग्रन्थ पढ़ाए।	1

Downloaded from cclchapter.com

(v) एक राजा किसी भी परिस्थिति में अपनी प्रजा को परेशान और दुखी नहीं करता। 1

प्रश्न- 6 काव्य-सौंदर्य- **(3)**

(i) भाव सौंदर्य 1½

(ii) शिल्प सौंदर्य 1½

भाव - विश्वामित्र परशुराम की नासमझी पर मन-ही-मन मुस्कराते हैं। वे सोचते हैं कि परशुराम राम और लक्ष्मण को साधारण क्षत्रिय बालक समझ रहे हैं। वह इनके बल और पराक्रम को नहीं जानते। ये दोनों लौहमयी तलवार हैं, गन्ने की बनी तलवार नहीं हैं, जो जीभ पर जाते ही गल जाए।

शिल्प - भाषा - अवधी

छंद - दोहा

अलंकार - श्लेष (खाँड शब्द के दो अर्थ)

मुहावरा प्रयोग (हरा ही हरा सूझना)

प्रश्न- 7 प्रश्नों के उत्तर **3+3= 6 अंक**

क) 'आत्मकथ्य' कविता जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित कविता है। इस कविता में उन्होंने यह संदेश दिया है कि आत्मकथा लिखने के लिए आत्मकथा लेखक को अपने जीवन की तमाम अच्छाइयों के साथ बुराइयों अथवा कमियों को भी पूरी ईमानदारी के साथ उजागर करना पड़ता है। अपने मित्रों आदि के बारे में भी सत्य लिखना होता है, अपने निजी तथा व्यक्तिगत क्षणों के बारे में लिखना होता है। अतः या तो व्यक्ति हिम्मत करके वह सब कुछ लिखे अन्यथा झूठी महानता प्राप्त करने के लिए कल्पना का सहारा लेकर आत्मकथा लिखने का कोई महत्त्व नहीं है।

ख) गोपियों के अनुसार योग साधना एक कड़वी ककड़ी के समान है जिसे निगला नहीं जा सकता।वे इसे एक ऐसी बीमारी मानती हैं जिसके बारे में न देखा, न सुना और न ही भोगा। वे योग की शिक्षा ऐसे लोगों को देने की बात कहती हैं जिनका मन विचलित या अस्थिर है।

खंड - ग (क्षितिज गद्य खंड)

प्रश्न- 8 बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर **(6)**

(i) ख) कंपनी के काम से 1

(ii) घ) फागुन 1

(iii) ख) पतनशील सामंती वर्ग पर 1

(iv) ख) विषयवार 1

(v) ग) पाँच दिनों तक 1

(vi) क) संस्कृति का 1

प्रश्न- 9 गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर **(5)**

(i) पाठ - बालगोबिन भगत , लेखक - रामवृक्ष बेनीपुरी 1

(ii) जिस दिन उनका इकलौता बेटा मरा। 1

(iii) वह कुछ सुस्त और बोदा - सा था 1

(iv) बालगोबिन भगत का बेटा कुछ सुस्त और बीमार-सा था इसीलिए उसे निगरानी की ज़्यादा आवश्यकता थी। 1

(v) बालगोबिन भगत की पुत्रवधू सुभग और सुशील थी। घर की पूरी प्रबंधिका बन कर बालगोबिन को दुनियादारी के कामों से मुक्त कर दिया था। 1

प्रश्न-10 लेखक/लेखिका परिचय **(5)**

क) जीवन परिचय 1

ख) प्रमुख रचनाएँ 1

ग) साहित्यिक विशेषताएँ 1½

घ) भाषा -शैली 1½

प्रश्न- 10 प्रश्नों के उत्तर **2+2 =4 अंक**

Downloaded from cclchapter.com

(क) पानवाला काला, मोटा व खुशमिजाज व्यक्ति है।क़स्बे के चौहारे पर उसकी पान की दुकान थी। उसकी बड़ी सी तोंद है वह किसी भी बात को जाने बिना ही उस पर टिप्पणी कर देता है। उसके मुँह में पान ठुसा रहता था, जिससे उसके दाँत लाल-काले हो गए थे। वह कैप्टन जैसे देशभक्त को लंगड़ा व पागल कहने से नहीं चूकता था। वह संवेदनशील व्यक्ति भी है, कैप्टन की मृत्यु की बात कहते समय उसकी आँखों में आंसू छलक आए थे।

(ख) लेखक की दृष्टि में 'सभ्यता' और 'संस्कृति' शब्दों की सही समझ अब तक इसलिए नहीं बन पाई है, क्योंकि हम इन दोनों बातों को एक ही समझते हैं या फिर एक-दूसरे में मिला लेते हैं। इन दोनों शब्दों के साथ कई बार 'भौतिक' और 'आध्यात्मिक' जैसे विशेषण भी लगा दिए जाते हैं। इन विशेषणों के प्रयोग के कारण यह निर्णय करना कठिन हो जाता है कि 'सभ्यता' और 'संस्कृति' एक ही हैं या फिर अलग-अलग वस्तुएँ हैं। यह जानना ज़रूरी है कि क्या यह एक चीज़ है अथवा दो चीज़ें हैं? और यदि दो हैं तो दोनों में अंतर क्या है? तभी सही बात समझ में आएगी। इसीलिए 'सभ्यता' और 'संस्कृति' की सही समझ अब तक नहीं बन पाई है।

खंड - घ (कृतिका भाग -2)

प्रश्न- 12 कृतिका भाग -2 के आधार पर किन्ही दो प्रश्नों के उत्तर **3+3 = 6 अंक**

(क) भोलानाथ की माँ जब तेल डालकर उसकी मालिश करती है और चोटी को गूँथ देती है तो वह सिसकने लगता है। परन्तु अपने साथियों को देखकर सिसकना इसलिए भूल जाता है, क्योंकि बच्चों का स्वभाव होता है कि वह अपनी उम्र के बच्चों के साथ ही खेलना पसंद करता है।भोलानाथ को भी अपने साथियों के साथ उछल-कूद करने में आनंद मिलता था। साथियों के बिना उसकी सारी मौज-मस्ती अधूरी रह जाती है। यदि वह अपने साथियों के सामने रोना-सिसकना जारी रखता, तो वे उसकी हँसी उड़ाते और उसे अपने साथ लेकर खेलने के लिए नहीं जाते। अपने मित्रों के साथ खेलने में भोलानाथ को बहुत आनंद आता था तथा अपने मित्रों के साथ वह तरह-तरह की शरारतें भी करता था। वह अपने साथियों की मस्ती देखकर उसी में मग्न हो जाता है जिस कारण वह सिसकना भूल जाता है।

(ख) जब लेखिका ने सड़क बनाने के लिए पत्थर तोड़ती सुंदर पहाड़ी औरतों को देखा तो इस दृश्य ने उसे झकझोर दिया। उनके शरीर कोमल थे, किंतु हाथों में कुदाल और हथौड़े थे। उनके हाथों में ठाठे पड़े हुए थे और पाँव फूले हुए थे। कई औरतों की पीठ पर बँधी टोकरी में उनके बच्चे थे। मातृत्व और श्रम-साधना एक साथ चल रही थी।

(ग) 'मैं क्यों लिखता हूँ?' अज्ञेय जी का एक प्रसिद्ध निबंध है.लेखक ने इस निबंध में बताया है कि लेखक की भीतरी विवशता ही उसे लिखने के लिए मजबूर करती है और लिखकर ही लेखक उससे मुक्त हो पाता है। प्रत्यक्ष अनुभव जब अनुभूति का रूप धारण करता है, तभी रचना पैदा होती है। अनुभव के बिना अनुभूति नहीं होती, परंतु यह आवश्यक नहीं है कि हर अनुभव अनुभूति बने । लेखक ने अपने द्वारा रचित 'हिरोशिमा' कविता की रचना का उदाहरण देते हुए स्पष्ट किया है कि अनुभव जब भाव - जगत् और संवेदना का हिस्सा बनता है, तभी वह कलात्मक अनुभूति में रूपांतरित होता है।

Downloaded from cclchapter.com

खंड - ङ नैतिक शिक्षा

प्रश्न (13) (क) बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर (4)

1. (iv) उपर्युक्त सभी 1

2. (ii) पेशवा साहब 1

3. (i) पक्षी विज्ञानी 1

4. (ii) मारग्रेट नोबल 1

(ख) हमें अहंकार से मुक्त होकर ऐसी वाणी का प्रयोग करना चाहिए, जिससे दूसरों को भी शीतलता की प्राप्ति हो तथा हम स्वयं भी शीतल हो जाए। (3)

(ग) स्त्री शिक्षा के विषय में मदनमोहन मालवीय जी के उच्च विचार थे। (3)
वे कहा करते थे, "स्त्री शिक्षा बहुत महत्त्वपूर्ण है क्योंकि स्त्रियाँ भावी सन्तान की माताएँ हैं। उनकी शिक्षा ऐसी हो, जो उनके व्यक्तित्व में प्राचीन तथा नवीन सभ्यता के गुणों का समन्वय कर सके।" इस प्रकार वे चाहते थे कि स्त्रियाँ ऐसी शिक्षा ग्रहण करें जिससे वे अपनी भावी संतान में प्राचीनता के साथ -साथ नवीन गुणों का भी समावेश करे।

------------------------XXXXXXXXXX ---------------------------

Downloaded from cclchapter.com